ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

16

हिन्दी उपन्यास - 2 : 2001-2022

विकल्प तृशूर

ISSN : 2231-6191

जन विकल्प

अंक : 16 जनवरी-जून 2023

पीयर रिव्यूड पत्रिका

हिन्दी उपन्यास-2 : 2001-2022

संरक्षक

के.जी. प्रभाकरन

प्रबन्ध संपादक

वी.जी. गोपालकृष्णन

संपादक

पी. रवि

सह संपादक

के.एम. जयकृष्णन

पी. गीता

सलाहकार समिति

रवि भूषण (राँची)

विनोद शाही (जालंधर)

वि. कृष्णा (हैदराबाद)

देवेन्द्र चौबे (नई दिल्ली)

विनोद तिवारी (नई दिल्ली)

संपादन सहयोग

सिन्धु. ए.
के. राजेश्वरी
वी.के. सुब्रह्मण्यन
श्रीलेखा के.एन.
निम्मी ए.ए.
षिगेश जी.एस.

पीयर रिव्यू टीम

डॉ. के.के. वेलायुधन, प्रोफेसर (Rtd), करूकुट्टी, एनणाकुलम, केरल।
डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी, प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. प्रज्ञा, प्रोफेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. उमा शंकर चौधरी, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली वि.वि., दिल्ली।
डॉ. प्रोमिला, एसिस्टेंट प्रोफेसर, IFLU, हैदराबाद, तेलंगाना।
डॉ. महेश एस., एसिस्टेंट प्रोफेसर, कालिकट वि.वि., मलप्पुरम, केरल।

आवरण

विकल्प, तृशूर

टाइप सेटिंग

एन.वी. राघवन

कार्यालय संपर्क

VIKALP BHAVAN,
Puthurkkara, Ayyanthole P.O., Thrissur-680 003, Kerala.
085475 68534, 094463 58534
E-mail : vikalpthrisur@gmail.com

संपादकीय संपर्क

P. Ravi, 'Parayil'
URA-119, Unichira, Changampuzha Nagar P.O.,
Ernakulam, Kerala - 682 033
09446269365
456raviparayil@gmail.com

सहयोग राशि : यह अंक : रु. 180/-, चार अंक : रु. 600/-

संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यवसायिक।
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक एवं संपादक मंडल को सहमति अनिवार्य नहीं है।
समस्त विवाद तृशूर न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

अनुक्रम

संपादकीय

1. नैतिक निस्संगता और आंतरिक भुरभुरापन से मुल्क के ईंधन बन जाने की त्रासद कथा (*ईंधन* : स्वयं प्रकाश) — प्रफुल्ल कोलख्यान
2. समय की पड़ताल और *काशी का अस्सी* (*काशी का अस्सी* : काशीनाथ सिंह) — नीलाभ कुमार
3. लोकतंत्र के क्षरण की त्रयी (*कैसी आगी लगाई* : असगर वजाहत) — निम्मी ए.ए.
4. फाँस की राजनीति (*फाँस* : संजीव) — हेमा जी.
5. शोषण युक्त संस्कृति और समाज का तर्पण (शिवमूर्ति : तर्पण) — प्रियदर्शिनी
6. कश्मीरियत के दर्द की दास्तान (*कथा सतीसर* : चन्द्रकांता) — षीना ईपन
7. सत्ता का ध्वंसराग, नक्सलवाद और बस्तर का आदिवासी (*बस्तर–बस्तर* : लोकबाबू) — वीरेन्द्र मोहन
8. भ्रष्ट के राजनीति के विरुद्ध बुलंद आवाज़ (*मुठभेड़* : शैलेश मटियानी) — षनिल के.पी.
9. जहालत से ग्रस्त जनता को जाग्रत करने की कामना (*अर्दली* : हरपाल सिंह अरुष) — कण्णन के.यू.
10. *अकाल संध्या* और भारतीय समाज (*अकाल संध्या* : रामधारी सिंह दिवाकर) — सुरेश कुमार निराला
11. आज की दुपहरी और चाय का दूसरा कप (*चाय का दूसरा कप* : ज्ञान प्रकाश विवेक) — रामप्रसाद रजबर
12. आज की दुपहरी और पाथरटीला संग–साथ (*पाथरटीला* : रूपसिंह चंदेल) — रामप्रसाद रजबर
13. कुदरत की झांकी और ईश्वर के बीज (*ईश्वर के बीज* : विनोद शाही) — अंबिली विश्वनाथन
14. दलित स्त्री विमर्श की माँग करती कथा (*वह लड़की* : सुशीला टाकभौरे) — कविता राज एन.
15. कागज़ की नाव को हकीकत की नाव बनाने की आकांक्षा — शहला

(*कागज़ की नाव* : नासिरा शर्मा)

16. हमारे समय का दारुण सच — वीरपाल सिंह यादव
(*गूंगी रुलाई का कोरस* : रणेन्द्र)

17. राम और काम के बीच असंतुलन में स्त्री जीवन की त्रासद कथा — वीरेन्द्र प्रताप
(*सेज पर संस्कृत* : मधु कांकरिया)

18. अवसरवादी राजनीति की दास्तान — आर्या ई. आर.
(*हलफनामा* : राजू शर्मा)

19. मीडिया और सामाजिक जीवन के विविध दृश्य — षिबी सी
(*ज़िन्दगी लाइव* : प्रियदर्शन)

20. बर्बर तम से जूझती–टूटती मनुष्यता की महागाथा — प्रियम अंकित
(*अस्थिफूल* : अल्पना मिश्र)

21. आत्मनिर्भर एवं स्वाधीन स्त्री की खोज — षेमिनाम टि एस
(*मोबाइल* : क्षमा शर्मा)

22. किसान जीवन की महागाथा — प्रज्ञा
(*अकाल में उत्सव* : पंकज सुबीर)

23. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से मुक्ति की आकांक्षा — एकता मंडल
(*प्रार्थना में पहाड़* : भालचन्द्र जोशी)

24. राजनीतिक पटल पर मानवाधिकार के प्रश्न — राजेश कुमार
(*एक और दुनिया होती* : शिवदयाल)

25. यथार्थ को रेखांकित करने का अथक प्रयास — रंजित रविशैलम
(*और सिर्फ तितली* : प्रदीप सौरभ)

26. किन्नर जीवन गाथा — इंदु के वी
(*किन्नर कथा* : महेन्द्र भीष्म)

27. हमारे समय का देशकाल — निशांत
(*राजा जंगल और काला चांद* : तरुण भटनागर)

28. साझी संस्कृति और इतिहास में ओझल स्त्री — विनीजा विजयन
(*बिसात पर जुगनू* : वंदना राग)

29. समाज का बंद घेरा बहुत मज़बूत होता है — विनोद तिवारी
(*लौटना नहीं* : कैलाश बनवासी)

30. बांग्लादेश के अभ्युदय की महागाथा — भीमसिंह
(*मैं बोरिशाइल्ला* : महुआ माजी)

31. दिल्ली की कपडा मिलों और मज़दूर बस्तियों का सच — अरुण होता
(*धर्मपुर लॉज* : प्रज्ञा)

32.	सांस्कृतिक अवनति को चिह्नित करती औपन्यासिक दस्तावेज (*वैकल्पिक गल्प* : चंदन पांडेय)	प्रणीता पी
33.	कुछ नोट्स कथा कहती है (*एक कस्बे का नोट्स* : नीलेश रघुवंशी)	विजयकुमार ए आर
34.	कस्बाई ज़िन्दगी के बदलते रूप (*एक कस्बे का नोट्स* : नीलेश रघुवंशी)	शबाना हबीब
35.	अंधेरे कोने में कैद लोकतंत्र (*अंधेरा कोना* : उमाशंकर चौधरी)	विष्णु तंकप्पन
36.	सीरदारी की तासीर (*मदारीपुर जंक्शन* : बालेन्दु द्विवेदी)	नीरज कुमार द्विवेदी

जन विकल्प

आगामी अंक

हिन्दी उपन्यास-3 : 2000-2022

स्त्री कहानी

सामान्य अंक

जन विकल्प

सहयोग राशि

व्यक्तिगत :	साधारण डाक से	: 4 अंक :	600/-
		: 8 अंक :	1200/-
	रजिस्ट्रेड डाक से	: 4 अंक :	700/-
		: 8 अंक :	1400/-
संस्थागत :	साधारण डाक से	: 4 अंक :	700/-
		: 8 अंक :	1400/-
	रजिस्ट्रेड डाक से	: 4 अंक :	800/-
		: 8 अंक :	1500/-

चेक/डिमांड ड्राफ्ट 'VIKALP THRISSUR' के नाम पर हों।
बैंक खाते में भी राशि जमा कर सकते हैं।

State Bank of India (SBI), Patturaikkal Branch, Thrissur, Kerala.
'VIKALP THRISSUR'
Savings A/c No. 67168206980
IFSC Code : SBIN0076604
WhatsApp No. : 9446358534 Google Pay : 85475 68534

राशि जमा करने की सूचना एस.एम.एस. अथवा वाट्सअप द्वारा दें।

संपर्क : VIKALP BHAVAN,
Puthurkkara, Ayyanthole P.O.,
Thrissur-680 003, Kerala.
vikalpthrisur@gmail.com

जनविकल्प **नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा**, नई दिल्ली के पुस्तक केन्द्र में तथा **NotNul.com** में उपलब्ध है।

संपादकीय

यूरोप में उपन्यास का उद्‌भव एवं विकास राष्ट्र–राज्य के रूपायन के साथ हुआ था। लेकिन भारत की स्थिति उससे पृथक रही। यहाँ नवोत्थान–नवजागरण का आरंभ पश्चिमी शिक्षा एवं संपर्क के साथ बल पकड़ने लगा था। दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन भी बल पकडने लगा था। लेकिन यूरोप यहाँ के लोगों को असभ्य, जीर्ण एवं प्राकृत कह रहा था। इस अंतर्द्वंद्व व संक्रमण के दौरान शिक्षित लोगों के भीतर निजी स्वतंत्र देश की चेतना जागने लगी। इस अस्तित्व संकट के दौरान आधुनिक शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवी इतिहास एवं ऐतिहासिक उपन्यास की रचना करने लगे। जनता को आत्मबल प्रदान करने के लिए निजी इतिहास की अनिवार्यता को वे महसूस करते थे। बंकिमचन्द्र के *आनंद मठ*, *कृष्णा चरित*, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का *गोरा* (बंगला), अप्पु नेटुंगाडी का *कुन्दलता*, चन्दु मेनोन का *इन्दुलेखा* (मलयालम) आदि की इस संदर्भ में याद कर सकते हैं। ये उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए हैं।

यह सर्वविदित है कि उपन्यास समाज जीवन का इतिहास है, साथ ही साथ देश का इतिहास भी। यह सिर्फ इतिहास ही नहीं, बल्कि समाज जीवन का आलोचनात्मक इतिहास है। यह वर्तमान में खड़ा होकर इतिहास–बोध के बल पर विभिन्न तबकों में बंटे समाज, जो देश–भर फैला हुआ है, की छानबीन करता है, उसके संश्लिष्ट यथार्थ को पकड़ने का प्रयास करता है। इस तरह के विचार विश्लेषण के वक्त उपन्यासकार का मस्तिष्क व विवेक भविष्य का स्वप्न भी संजोता नज़र आता है। इतिहासकार स्थल और काल पर ध्यान देने को मज़बूर होता है जबकि उपन्यासकार इस तरह के बंधनों से स्वतंत्र भी है। वह अपने जीवन दर्शन के आधार पर कल्पना के पंख धारण करता है। इस प्रकार वह इतिहास की सीमाओं का उल्लंघन करता है, और अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन भी करता है।

आज खंडों में विभक्त बृहत्काय उपन्यास का समय नहीं है, उसे पाठक, प्रकाशक की मांगों पर भी ध्यान देना पड़ता है। दूसरी ओर समाज जीवन जटिल से जटिलतर होते समय में देश या समाज जीवन को लिखना भी मुश्किल है। यदि लिखने का प्रयास करें तो उसकी सफलता पर भी संदेह होगा। पहले प्रेमचन्द ने तत्कालीन देश व समाज को लिखने का सफल प्रयास *गोदान* उपन्सास के द्वारा किया था। *गोदान* में गाँव और किसान हैं, गाँव की समस्याएँ हैं, उन समस्याओं से मुक्ति चाहते लोग हैं, पूँजीवादी–धार्मिक–सामंती शोषकों के खेल हैं, दलित जीवन की समस्याएँ एवं समाधान हैं, बहुमुखी शोषण से मुक्ति चाहती स्त्री है और इन सबके साथ